

Think
IAS... 



Think
Drishti

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

विश्व का भूगोल

(भाग-2)



दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (*Distance Learning Programme*)

Code: JHPM22



झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

विश्व का भूगोल (भाग-2)



641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 8750187501, 011-47532596

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

 www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

 www.twitter.com/drishtiiias

5. जलमंडल	5-57
5.1 जलीय चक्र	5
5.2 महासागरीय नितल के उच्चावच	6
5.3 महासागरीय जल का तापमान एवं लवणता	13
5.4 महासागरीय तरंग एवं धाराएँ	22
5.5 महासागरीय निक्षेप	38
5.6 प्रवाल एवं प्रवाल भित्तियाँ	42
5.7 ज्वार-भाटा	47
5.8 सागरीय संसाधन	49
6. विश्व की मृदा एवं बायोम	58-72
6.1 मृदा	58
6.2 विश्व के प्रमुख बायोम	62
6.3 विश्व में वन एवं मत्स्य संसाधन का वितरण	65
7. आर्थिक भूगोल	73-141
7.1 कृषि	73
7.2 पशुपालन एवं मत्स्यपालन	81
7.3 विश्व के खनिज संसाधन	83
7.4 भारत सहित विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	103
7.5 भारत सहित विश्व के उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक	114
7.6 विश्व में परिवहन के प्रमुख साधन	128
8. जनसंख्या एवं अधिवास	142-154
8.1 जनसंख्या के प्रकार एवं इसके प्रतिरूप	142
8.2 पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण	144
8.3 जनसंख्या वृद्धि एवं इसके सिद्धांत	148
8.4 नगरीकरण	150

9. मानव भूगोल	155-168
9.1 विश्व की प्रजातियाँ तथा जनजातियाँ	155
9.2 मानव प्रवास	162
9.3 विश्व की शरणार्थी समस्या	164
10. विश्व का महाद्वीपीय भूगोल	169-232
10.1 एशिया	169
10.2 यूरोप	188
10.3 अफ्रीका	198
10.4 उत्तरी अमेरिका	206
10.5 दक्षिण अमेरिका	215
10.6 ऑस्ट्रेलिया	222
10.7 अंटार्कटिका	227
10.8 विविध	228

जलमंडल से तात्पर्य पृथ्वी पर उपस्थित समस्त जलराशि से है। पृथ्वी के लगभग 71% भाग पर जल उपस्थित है अर्थात् पृथ्वी के लगभग तीन-चौथाई भाग पर जलमंडल का विस्तार पाया जाता है। आकृति तथा विस्तार की दृष्टि से इस विस्तृत जलमंडल को महासागर, महाद्वीपों के बीच में स्थित सागर, लघु सागर तथा खाड़ियों में विभाजित किया जाता है।

प्रमुख महासागर: प्रशांत महासागर, अंध या अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक महासागर।

क्रुमेल के अनुसार, “धरातल के 70.2% भाग पर जल और 29.8 प्रतिशत भाग पर स्थल का विस्तार पाया जाता है।” पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में स्थलीय भाग की अधिकता है जबकि दक्षिणी गोलार्द्ध में जलीय भाग की अधिकता है। पृथ्वी पर जल की अधिकता के कारण ही इसे ‘नीला ग्रह’ कहा जाता है।

पृथ्वी पर उपस्थित कुल जल का लगभग 97.25% जल महासागरों में है, जो खारा जल है अथवा पीने योग्य नहीं है। शेष लगभग 3% जल जो ताजा एवं पीने योग्य है, हिमानियों (लगभग 2%), भूमि जल, झीलों, नदियों आदि के अंतर्गत आता है।

जलस्रोत या जलभंडार	समस्त जलराशि का प्रतिशत
महासागर	97.25
हिमानियाँ एवं हिमटोपियाँ	2.05
भूमिगत जल	0.68
झीलों	0.01
मृदा में नमी	0.005
वायुमंडलीय नमी	0.001
नदियाँ	0.0001
जैवमंडलीय जल	0.00004

5.1 जलीय चक्र (Hydrological Cycle)

- जल का इसके विभिन्न भौतिक रूपों (तरल, गैस एवं ठोस) में स्थलमंडल एवं जलमंडल, महाद्वीपों एवं महासागरों, धरातल एवं भूमिगत, वायुमंडल एवं जैवमंडल आदि के मध्य निरंतर प्रवाह एवं आदान-प्रदान को ‘जलीय चक्र’ कहते हैं।
- जल एक चक्रीय एवं नवीकरणीय संसाधन है अर्थात् प्राकृतिक रूप से इसकी प्रकृति इस तरह की है कि इसे प्रयोग एवं पुनः प्रयोग किया जा सकता है।
- यह पृथ्वी पर वायुमंडल एवं जलमंडल के विकास से लेकर कभी समाप्त न होने वाली व्यवस्था है। यह जैवमंडल का महत्त्वपूर्ण घटक है।

घटक	जल चक्र संबंधी प्रक्रियाएँ
महासागर, सागर, खाड़ियाँ, नदियाँ	वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन, ऊर्ध्वपातन
वायुमंडलीय नमी	संघनन, वर्षण
हिम रूप में	हिम पिघलने पर नदी-नालों के रूप में बहना
धरातलीय बहाव	जलधाराएँ, ताजा जल संग्रहण, जल रिसाव
भूमिगत जल	भूमि जल का विसर्जन, झरनों के रूप में बहाव
जैवमंडल में जल	वनस्पतियों से वाष्पोत्सर्जन, जीवों द्वारा प्रयोग एवं पुनःप्रयोग

- जल चक्र यह उद्घाटित करता है कि जिस मात्रा एवं अनुपात में जल का वाष्पन (Evaporation) एवं वाष्पोत्सर्जन (Evapotranspiration) होता है, उसी मात्रा एवं अनुपात में ‘वर्षण’ (Precipitation) होता है अर्थात् पृथ्वी पर नियमित कई भौगोलिक संतुलनकारी प्रक्रियाओं के अंतर्गत जल चक्र एक अतिमहत्त्वपूर्ण संतुलनकारी प्रक्रिया है।
- पृथ्वी पर तीव्र जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, उपभोग वृद्धि, पर्यावरणीय ह्रास एवं ताजे सीमित जलीय संसाधन की कमी से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

निर्मित जल

सागरीय जल को शुद्ध करके उसे ताजे जल में बदलकर उसे पेयजल के रूप में उपयोग किया जाता है, इस तरह के जल को निर्मित जल कहते हैं। जल को शुद्ध करने की प्रक्रिया को अलवणीकरण कहते हैं।

प्रमुख परिभाषाएँ (Major definition)

- **आधार रेखा:** सागर की ओर निकले धरातलीय भागों को मिलाने वाली कल्पित रेखा को आधार रेखा कहते हैं।
- **आंतरिक जल:** धरातलीय भाग एवं आधार रेखा के बीच स्थित सागरीय जल को आंतरिक जल कहते हैं।
- **निर्मित जल:** तकनीकी विधियों से खारे सागरीय जल को रिफाईंड करके पीने योग्य ताजे जल में बदलना। इस शोधित जल को निर्मित जल कहते हैं।
- **लाल ज्वार:** सूक्ष्म स्तरीय पौधे, जो कुछ लाल-भूरे होते हैं, जिनमें तेजी से प्रजनन प्रस्फोट होता है तथा सागरीय सतह पर लाल-भूरे पौधों का अपार समूह निर्मित हो जाता है, इसे लाल ज्वार कहते हैं।
- **हैलिंग:** हेल मछली पकड़ने के कार्य को हैलिंग कहते हैं।
- **तरंगिका:** सर्फ लहरों के सागरीय तट से टकराने के बाद सागर की ओर वापस होने वाली तरंगों को तरंगिका कहते हैं।
- **प्रवाह:** तीव्र वायु गति से प्रेरित होकर सागरीय जल आगे बढ़ने लगे तो इस क्रिया को प्रवाह कहते हैं, जैसे- उत्तरी अटलांटिक व दक्षिणी अटलांटिक प्रवाह आदि।
- **प्रतोड़न रेखा:** सागरीय तटों से दूर समान ऊँचाई वाली तरंगों के शिखर टूटने के बाद सर्फ के रूप में बदल जाते हैं तथा उस दूरी से तट के समानांतर रेखा खींची जाए तो उस रेखा को प्रतोड़न रेखा कहते हैं।
- **एटॉल:** अँगूठी, घोड़े की नाल या मुद्रिका के आकार वाले प्रवाल को एटॉल कहते हैं।
- **फरोस:** छोटे-छोटे एटॉलों की लैगून झीलों की शृंखला को फरोस कहते हैं।
- **जूजैथले शैवाल:** यह एककोशकीय प्रकाश संश्लेषी शैवाल पौधे हैं, जो प्रवाल के शरीर के बाह्य भाग में रहते हैं।
- **बोल्ड चैनल:** स्थलीय भागों एवं प्रवाल भित्तियों के मध्य रिक्त स्थान में निर्मित लैगून को बोल्ड चैनल कहते हैं।
- **प्रवाल:** समुद्री जीवों की श्रेणी के तथा जेलीफिश के संबंधी जीवित जंतु को प्रवाल या पॉलिप कहते हैं, जो प्रवाल भित्तियों को निर्मित भी करते हैं।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- समुद्री जल की औसत लवणता लगभग 35‰ है।
- 300 से 1000 मी. गहराई वाले भाग जिनमें सागरीय जल के तापमान में तेजी से परिवर्तन होता है, उसे थर्मोक्लाइन कहते हैं।
- मेरियाना गर्त या ट्रेंच विश्व का सबसे गहरा गर्त है, जो प्रशांत महासागर में स्थित है।
- ग्रेट बैरियर रीफ ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर प्रशांत महासागर में स्थित है।
- जिन समुद्री पर्वतों का शीर्ष सपाट होता है, उन्हें गुयॉट (Guyot) कहते हैं।
- सागरीय जल की लवणता में सोडियम क्लोराइड का सर्वाधिक योगदान है।
- सर्वाधिक लवणता वान झील (तुर्की) में पाई जाती है।
- स्थल की ऊँचाई तथा महासागरों की गहराई को उच्चतामितीय वक्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
- महासागरीय जल का औसत दैनिक तापांतर नगण्य होता है।
- 300 से 1000 मी. की गहराई वाले भाग को जिनमें सागरीय जल के घनत्व में तेजी से परिवर्तन होता है, पाइक्नोक्लाइन कहते हैं।
- उच्च अक्षांशों में गहराई के साथ लवणता में वृद्धि होती है।

- सागरों में लवणता के क्षैतिज वितरण को समलवण रेखा (Isohaline) द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
- असंगठित पदार्थों के महासागरीय नितल पर एकत्रित होने की क्रिया को महासागरीय निक्षेप कहते हैं।
- प्रशांत महासागर में अभी तक 32 गर्तों की खोज की गई है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये-

5thJPSC (Pre)

सूची-I

- A. गल्फ स्ट्रीम
B. पश्चिमी वायु प्रवाह
C. पेरू धारा
D. पश्चिमी आस्ट्रेलियाई

सूची-II

1. प्रशांत महासागर
2. पश्चिमी वायु के क्षेत्र में ऊपर से पूरब की ओर चलने वाली धीमी धारा
3. हिंद महासागर
4. गर्म धारा

कूट:

A	B	C	D
(a) 4	2	1	3
(b) 1	3	4	2
(c) 4	3	1	2
(d) 1	2	4	3

2. शीत सागरीय लहर कौन सी है- 2ndJPSC (Pre)

- (a) फ्लोरिडा (b) क्यूरोसिओ
(c) गल्फ स्ट्रीम (d) क्यूराइल (ओयाशियो)
3. 'सर्वाधिक लवणता' किस सागर में पाई जाती है?
(a) प्रशांत महासागर (b) मृत सागर
(c) अरब सागर (d) भूमध्य सागर

4. ग्रेट बैरियर रीफ कहाँ स्थित है?

- (a) प्रशांत महासागर में (b) हिंद महासागर में
(c) भूमध्य सागर में (d) अटलांटिक महासागर में

5. महासागर में ज्वार-भाटा की उत्पत्ति होती है-

- (a) सूर्य के प्रभाव से
(b) पृथ्वी की घूर्णन गति से
(c) सूर्य और चंद्रमा के संयुक्त प्रभाव से
(d) गुरुत्वाकर्षण एवं अपकेंद्रीय बल

6. निम्नलिखित समुद्री धाराओं में से कौन हिंद महासागर की धारा नहीं है?

- (a) अगुलहास धारा
(b) मोजांबिक धारा
(c) दक्षिण भूमध्यरेखीय धारा
(d) बेंगुएला धारा

7. विश्व का सबसे गहरा समुद्री गर्त कौन है?

- (a) नार्टहन (b) मेरियाना
(c) मैनहटन (d) रिचार्ड्स

8. सोमाली ट्रोगनी कहाँ स्थित है?

- (a) प्रशांत महासागर में
(b) हिंद महासागर में
(c) अटलांटिक महासागर में
(d) आर्कटिक महासागर में

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (b) 4. (a) 5. (d) 6. (d) 7. (b) 8. (b)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. महासागरीय निक्षेपों का स्रोत के आधार पर वर्गीकरण कीजिये।
2. महासागरीय जल के घनत्व को नियंत्रित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिये।
3. महासागरीय तापमान के वितरण का विस्तृत विवरण दीजिये।
4. तापमान, घनत्व एवं लवणता में अंतर्संबंध समझाइये।
5. महासागरीय धाराओं की दिशा परिवर्तन करने वाले कारकों की चर्चा करें।
6. प्रवाल भित्ति के प्रकारों की चर्चा करें।

6.1 मृदा (Soil)

मिट्टी या मृदा भूतल की ऊपरी परत होती है जिसका निर्माण चट्टानों के टूटने से, पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं के सड़े-गले अंश, जल, गैस तथा जीव-जंतुओं के अवशेषों के मिश्रण से होता है। इसे एक संसाधन माना जाता है, क्योंकि इसके निर्माण में काफी समय लगता है।

मृदा निर्माण के कारक (Factor of Soil Formation)

मृदा के निर्माण में कुछ महत्वपूर्ण कारक सम्मिलित हैं जिनका विवरण निम्न हैं:

आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ

मिट्टी के निचले भाग में पाए जाने वाले चट्टानी संस्तर को आधारभूत चट्टान व जनक पदार्थ कहते हैं। मिट्टी का निर्माण चट्टानों के भौतिक एवं रासायनिक अपक्षय के कारण होता है।

जलवायु

जलवायु मिट्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी निश्चित जलवायु वाले क्षेत्र में दो विभिन्न जनक पदार्थ एक ही प्रकार की मिट्टी का निर्माण करते हैं।

स्थलाकृति

उच्चावच, ऊँचाई या ढाल आदि स्थलाकृतियों के घटक के रूप में मिट्टी के जमाव तथा उसके अपरदन पर प्रभाव डालते हैं। तीव्र ढाल वाले क्षेत्रों में अपरदन की क्रियाएँ अधिक होती हैं जिसमें प्रायः मोटी मिट्टी की एक पतली परत रह जाती है। इसे अवशिष्ट मृदा कहते हैं।

जैविक पदार्थ

जैविक पदार्थ में वनस्पतियाँ, जीव-जंतु व मानवीय प्रभाव आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इन क्रियाओं द्वारा भी मिट्टी का विकास होता है।

विकास की अवधि अथवा समय

मिट्टी के निर्माण का कार्य बहुत मंद गति से होता है। समय बीतने के साथ मिट्टी के गुणों में भौतिक परिवर्तन आता रहता है। मिट्टी के विकास में तीन अवस्थाएँ शामिल होती हैं-

- (i) युवा अवस्था (ii) प्रौढ़ अवस्था (iii) जीर्ण अवस्था।

मिट्टी का वर्गीकरण (Classification of soil)

संयुक्त राज्य अमेरिका में सी.एफ. मारबुट ने 1938 ई. में मिट्टी के वर्गीकरण की व्यवस्थित योजना प्रस्तुत की जिन्होंने विश्व भर की मिट्टी को आनुवंशिक कारकों के आधार पर 30 बड़े भागों में बाँटा तथा इन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं-

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल का एक प्रमुख अंग है जिसमें धरातल पर मानवीय आर्थिक क्रियाओं में अलग-अलग स्थानों पर पाई जाने वाली विभिन्नताओं को सम्मिलित किया जाता है। इन क्रियाओं में मृदा, जल, खनिज, ऊर्जा, जैविक तत्व आदि प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही पशुपालन, मत्स्यपालन, कृषि, परिवहन एवं संचार आदि शामिल हैं। आर्थिक संरचना संबंधी योजना भी भूगोल की शाखा है।

7.1 कृषि (Agriculture)

कृषि या खेती अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अंतर्गत विभिन्न फसलों एवं फलों, वनस्पतियों आदि को सम्मिलित किया जाता है। विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की भौगोलिक स्थितियाँ पाई जाती हैं। इस प्रकार कृषि की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न होती है। फलस्वरूप विश्व में फसलों का वितरण भी अलग-अलग होता है।

कृषि उत्पादकता (Agriculture productivity)

- बड़े कृषि क्षेत्रों में श्रम उत्पादकता ज़्यादा रहती है परंतु जिन क्षेत्रों में सघन कृषि होती है उन क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर पैदावार ज़्यादा होती है। इस प्रकार कृषि उत्पादकता का अर्थ प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति श्रमिक उत्पादन से है।
- इन दोनों स्थितियों में भारत में कृषि उत्पादकता में पिछड़ापन बना हुआ है। इसका मुख्य कारण कृषि पद्धति का पर्याप्त विकसित न हो पाना है, परंतु जिन क्षेत्रों में हरित क्रांति हुई थी उन क्षेत्रों की प्रति श्रमिक व प्रति हेक्टेयर उत्पादकता अधिक पाई जाती है।
- कृषि उत्पादकता में दो महत्वपूर्ण कारक शामिल होते हैं- भौतिक व गैर-भौतिक।
- जलवायु, मिट्टी व स्थलाकृतिक ढाल जैसी अन्य विशेषताएँ भौतिक कारकों में शामिल हैं, जबकि संस्थागत व संरचनात्मक तथा राजनीतिक प्रयास गैर-भौतिक कारकों में शामिल हैं।
- कृषि उत्पादकता में उत्पादन की अधिकता पर विशेष बल दिया जाता है।

शस्य गहनता (Crop intensification)

- एक वर्ष में कई फसलों को उगाना शस्य गहनता कहलाता है। इसे निम्नलिखित सूत्रों से दर्शाया जाता है-

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{\text{सकल फसल क्षेत्र}}{\text{वास्तविक कृषि क्षेत्र}} \times 100$$

- यदि किसी कृषक के पास 10 हेक्टेयर कृषि भूमि है तथा वह खरीफ, रबी एवं जायद की फसलों में क्रमशः 10, 7 एवं 3 हेक्टेयर में कृषि करता हो तो-

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{20}{10} \times 100 \text{ हो तो उसकी शस्य गहनता } 200 \text{ होगी।}$$

- फसल गहनता बढ़ाने के लिये सुव्यवस्थित सिंचाई, उर्वरक, मिश्रित फसल, कुशल यांत्रिकीकरण, उपयुक्त पौध सुरक्षा आदि उपाय किये जा सकते हैं।
- विश्व की प्रमुख फसलों की सामान्य जानकारी निम्नलिखित रूपों में प्राप्त की जा सकती है-

मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करते हुए देश के आर्थिक विकास में योगदान देता है। राष्ट्र की प्रगति प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों के उचित अनुपात पर निर्भर करती है। संसाधनों की अपेक्षा जनसंख्या का अधिक घनत्व होने पर प्रायः देश के आर्थिक विकास की दर धीमी रहती है।

मानव अपनी शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संस्कृति का निर्माण करता है, इसीलिये पृथ्वी पर विभिन्न क्षेत्रों में मानव संसाधन की संख्या (जनसंख्या), उसका प्रादेशिक वितरण, वृद्धि संरचनात्मक विशेषताओं, क्षमता तथा उसकी समस्याओं का अध्ययन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार स्वयं मानवीय शक्ति, बौद्धिक ज्ञान व तकनीकी में सबसे अधिक महत्वपूर्ण संसाधन है।

8.1 जनसंख्या के प्रकार एवं इसके प्रतिरूप (Types of Population and its Pattern)

जनसंख्या का आशय किसी भूक्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों की संख्या से है। पृथ्वी के विभिन्न भागों में जनसंख्या के वितरण में अत्यधिक विषमता पाई जाती है। जो स्थल-खंड मानव निवास के लिये उपयुक्त है वहाँ जनसंख्या का अत्यधिक संकेंद्रण पाया जाता है। इसके विपरीत पृथ्वी के अनेक बड़े-बड़े भूखंड मनुष्य के लिये अनुपयुक्त होने के कारण पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से निर्जन तथा वीरान पड़े हैं।

जनाधिक्य, अनुकूलतम जनसंख्या एवं अवजनसंख्या (Over population, optimum population and under population)

विश्व में जनसंख्या एवं संसाधनों के वितरण तथा तकनीकी विकास की दृष्टि से काफी अंतर पाया जाता है। किसी भी प्रदेश में उपलब्ध तकनीकी को ध्यान में रखकर जनसंख्या संसाधनों के आधार पर जनाधिक्य, अनुकूलतम जनसंख्या तथा अवजनसंख्या की स्थिति हो सकती है। अनुकूलतम जनसंख्या की स्थिति में जनसंख्या एवं संसाधनों का अनुपात संतुलित होता है। अतः ऐसी स्थिति में आर्थिक विकास का स्तर उच्च एवं प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। यदि संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक हो जाती है तो ऐसी स्थिति में संसाधनों पर जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है जिसके कारण जीवन स्तर निम्न हो जाता है। वहीं अवजनसंख्या की स्थिति में संसाधनों की तुलना में जनसंख्या के कम होने के कारण आर्थिक विकास की प्रक्रिया मंद होती है। वर्तमान समय में पश्चिमी यूरोप, यू.एस.ए., जापान आदि देश अनुकूलतम जनसंख्या, दक्षिण एशिया, मध्य अमेरिका के देश जनाधिक्य एवं ब्राजील तथा मध्य एशिया के देश अवजनसंख्या के उदाहरण हैं।

आयु संरचना

आयु संरचना विभिन्न आयु वर्ग के लोगों की संख्या को प्रदर्शित करती है। जनसंख्या संघटक का यह एक महत्वपूर्ण सूचक है क्योंकि 15 से 59 आयु वर्ग के बीच जनसंख्या का विस्तृत आकार एक बड़ी कार्यशील जनसंख्या को इंगित करता है। 60 वर्ष से अधिक आयु वाली जनसंख्या का एक बड़ा अनुपात उस वृद्ध जनसंख्या को प्रदर्शित करता है, जिसे स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं के लिये अधिक खर्च की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार युवा जनसंख्या के उच्च अनुपात का अर्थ है कि प्रदेश में जन्म दर ऊँची व जनसंख्या का अधिकांश युवा है।

आयु-लिंग पिरामिड

जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना का अभिप्राय विभिन्न आयु वर्ग की स्त्रियों एवं पुरुषों की संख्या से है। जनसंख्या पिरामिड का प्रयोग जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना को दर्शाने के लिये किया जाता है। जनसंख्या पिरामिड की आकृति जनसंख्या की विशेषताओं को परिलक्षित करती है।

मानव भूगोल भूगोल की एक प्रमुख शाखा है जिसके अंतर्गत मानव की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल के अंतर्गत मानवीय तथ्यों, मानव व्यवसाय, पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण, विश्व की प्रजातियाँ व जनजातियाँ, प्रवास व स्थानांतरण, नगरीकरण आदि का अध्ययन समाहित होता है। यह पृथ्वी और मनुष्य के अंतर्संबंधों की एक नई संकल्पना प्रस्तुत करता है।

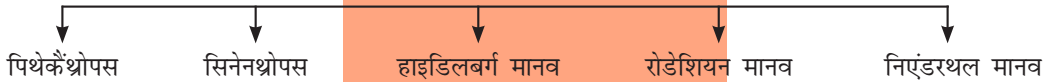
9.1 विश्व की प्रजातियाँ तथा जनजातियाँ (*Species and Tribes of the World*)

मानव प्रजाति से तात्पर्य उस मानव वर्ग से है जो वंशानुक्रम के द्वारा शारीरिक लक्षणों में समानता रखता हो। यह एक जैविक उपचार है जिसका संबंध उस वर्ग से होता है, जिसमें जैविक रूप से कुछ समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। किसी भी मानव प्रजाति के शारीरिक लक्षण वंशानुक्रम द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी समान रहते हैं।

प्रजाति के लक्षण और वंशज गुण आनुवंशिकता के द्वारा संक्रमण करते रहते हैं। अतः वह मानव वर्ग जिसके सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना के लक्षण, जैसे-त्वचा का रंग, सिर की लंबाई एवं चौड़ाई, बाल, नाक का नुकीलापन या चपटापन, होंठों की मोटाई आदि लगभग एक जैसे हों, प्रजाति के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। ये विशेषताएँ जीन (Gene) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचालित होती हैं।

मानव उद्विकास का क्रम (*Sequence of human evolution*)

आदिमानव से वर्तमान मानव के विकास का क्रम निम्नलिखित है—



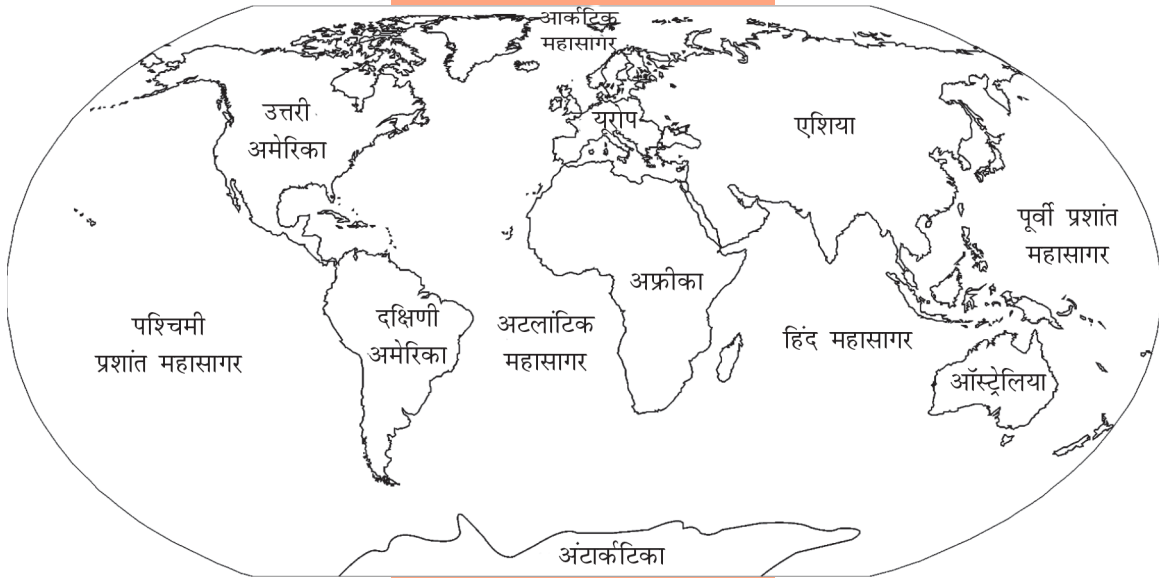
मानव विकास का क्रम	विशेषताएँ
पिथेकैंथ्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> ● इसे आदिमानव समझा जाता है। ● पिथेकैंथ्रोपस शब्द का अर्थ सीधा खड़ा होने वाला मानव अर्थात् वानर मानव से है। ● यह वनमानुष एवं वर्तमान जीव के बीच की कड़ी है। ● इस मानव के जीवाश्म जावा द्वीप पर पाए गए थे। ● इसे जावा मानव भी कहा जाता है तथा वर्तमान में इसे 'होमो इरेक्टस' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
सिनेनथ्रोपस	<ul style="list-style-type: none"> ● यह आदिमानव के बाद का मानव था। ● इस मानव का मस्तिष्क वनमानुष की अपेक्षा बड़ा था। ● इस मानव को 'पेकिंग' मानव भी कहा जाता है। ● इसके जीवाश्म चीन से प्राप्त हुए हैं। ● इस मानव के शरीर में कई परिवर्तन हुए।
हाइडिलबर्ग मानव	<ul style="list-style-type: none"> ● यह मानव वर्तमान मनुष्य से अधिक मिलता-जुलता है। ● हाइडिलबर्ग मानव प्लीस्टोसीन काल के प्रथम हिमयुग का है। ● जर्मनी के हाइडिलबर्ग के समीप इस मानव के जबड़े की हड्डियाँ मिली थीं।

विश्व का महाद्वीपीय भूगोल (Continental Geography of the World)

महाद्वीप और महासागर धरातल के प्रथम उच्चावच हैं। महाद्वीपों के निर्माण में प्लेटों की गति की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। सर्वप्रथम एंटोनियो स्नाइडर ने 1858 ई. में महाद्वीपों के प्रवाह की संभावना को व्यक्त किया था किंतु वेगनर महोदय ही सर्वप्रथम महाद्वीप व महासागर की उत्पत्ति की स्पष्ट व्याख्या देने में सफल हुए।

वेगनर के अनुसार कार्बोनीफेरस काल में सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे जिसे पेंजिया कहा गया तथा पेंजिया के चारों ओर स्थित विशाल सागर को पेंथालासा का नाम दिया गया। अंतिम-ट्रियासिक युग में पेंजिया का विभाजन प्रारंभ हुआ तथा वह दो भागों में बँट गया। इसका एक भाग उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे अंगारालैंड कहा गया तथा दूसरा भाग दक्षिण की ओर प्रवाहित हुआ, जिसे गोंडवाना लैंड कहा गया।

अंतिम-क्रिटेशियस युग में गोंडवाना लैंड का भी विभाजन आरंभ हो गया, जिसके फलस्वरूप दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, प्रायद्वीपीय भारत, मेडागास्कर तथा ऑस्ट्रेलिया का निर्माण हुआ। अंगारालैंड के टूटने के कारण उत्तरी अमेरिका, यूरोप तथा एशिया बना। विस्थापन की इस प्रक्रिया में कई भौगोलिक व जलवायविक परिवर्तन देखने को मिले।



10.1 एशिया (Asia)

एशिया जनसंख्या व क्षेत्रफल, दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। एशिया को यूरोप से भूमध्य सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, यूराल पर्वत तथा डारडेनेल्स व बॉसपोरस जलसंधियाँ अलग करती हैं, वहीं बेरिंग जलसंधि इसे उत्तरी अमेरिका से अलग करती है।

लाल सागर तथा स्वेज जलडमरूमध्य एशिया को अफ्रीकी मुख्यभूमि से अलग करते हैं। एशिया महाद्वीप का अधिकांश भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है किंतु इंडोनेशिया के कुछ द्वीप दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित हैं।

एशिया के स्थलरुद्ध देश

- मंगोलिया, कजाकिस्तान, नेपाल, भूटान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, तजाकिस्तान, लाओस, अफगानिस्तान।
- स्थलरुद्ध देशों में कजाकिस्तान सबसे बड़ा देश है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- ✓ पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- ✓ विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- ✓ प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

 DrishtiIAS

 YouTube Drishti IAS

 drishtias

 drishtithevisionfoundation